शासकीय शिक्षण संस्थानों क विस्तार का अध्ययन ''ग्वालियर जिले के संदर्भ में''

मृदुलता सिकरवार[1], डॉ. मोनिका मालविया[2]

[1]शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र) भारत

[2]सह–प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र) भारत

सरांश

किसी भी देश का विकास वहां की शिक्षण संस्थानों और उनके विस्तार से सीधा जुड़ा हुआ होता है। एक देश का विकास शिक्षा के द्वारा तीव्र गती से होता है और शिक्षा के लिए शिक्षण सस्थानों का सही से विकास होना चाहिए। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा को बहुत महत्व दिया है क्योंकि भारत देशवासियों की यही मान्यता रही है कि विद्या रूपी धन सबसे महान है। प्राचीन काल में गुरूकुल पद्धति और तक्षशिला एंव नालंदा आदि विश्वविद्यालय इस बात के साक्षात उदाहरण है। शिक्षा और उच्च शिक्षण संस्थनों के कारण ही भारत विश्व गुरू कहा जाता है। प्राचीन काल में सामाजिक, शैक्षणिक एंव सार्वजनिक संस्थानों को ही समानता का अधिकार दिया था जिसके परिणाम स्वरूप संस्थानों में अस्त्र, शस्त्र तथा पारिस्थितिकीय शास्त्र विद्या का ही गहन अध्ययन किया जाता था परन्तु धीरे–धीरे समय के साथ परिस्थितियां बदलती गई और शिक्षा में परिवर्तन होते गए इसके परिणाम स्वरूप ग्वालियर जिले के भी शिक्षण संस्थानों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। ग्वालियर में शिक्षण संस्थानों की कोई कमी नही है और ना ही संपूर्ण भारत में परंतु सभी शासकीय संस्थान एक जैसे नहीं होते है कुछ तो बहुत प्रसिद्ध होते है तो कुछ नाम मात्र होते है शिक्षा का उत्तरदायित्व मूलत: राज्य सरकार का होता है केंद्र सरकार तो शिक्षा और शिक्षण सस्थानों में तालमेल स्थापित करती है तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से उच्च शिक्षा का स्तर तय करती है और अनुसंधान तथा वैज्ञानिक एंव प्राविधिक शिक्षा की व्यवस्था करती है शिक्षा के विकास का कार्य देश की केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों मिलकर करती है पिछले 15 वर्षो से शिक्षा और शिक्षण संस्थानो का अधिक विकास हुआ है। ''धरती उर्वरा हो तभी फसल होती है ठीक उसी प्रकार से शिक्षण सस्थानों का भी अच्छा होना जरूरी है तभी शिक्षा अच्छी होती है'' स्वतंत्रता से पहले शिक्षा का इतना विकास नहीं हुआ था किंतु जीवन को सही दिशा शिक्षा के द्वारा ही प्राप्त होती है और इसके लिए शिक्षण संस्थानों की बहुत आवश्यक भूमिका होती है

मुख्य बिन्दु–शिक्षा, विश्वविद्यालय, सरकार आदि।

I प्रस्तावना

ग्वालियर

विकास प्रकृति की नियती होती है और यह एक सतत प्रकिया है। समय सदैव बदलता रहता है और समय के साथ– साथ परिस्थितियां भी बदलती रहती है और मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है तथा वह विकास के लिए सदैव प्रयास करता रहता है और इसी के परिणामस्वरूप शिक्षा के विकास तथा सामाजिक ,आर्थिक विकास के लिए शिक्षण संस्थानों का विस्तार करता है। ग्वालियर जिले में शैक्षणिक संस्थानों का काफी विकास हुआ है अतः विद्यार्थियों के लिए शिक्षण संस्थानों के कई स्वरूप भी बदले है जिसका सम्बंध तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा विज्ञान, सूचना विज्ञान एंव कम्प्यूटर विज्ञान से सम्बंधित शिक्षण संस्थानों से है और इस प्रकार शिक्षा के सकारात्मक परिणाम सामने आए। जिस समय ग्वालियर नगर का विकास हुआ था उस समय ग्वालियर एक रियासत के रूप में था और इस पर जमीदारों का राज था परन्तु ग्वालियर में उच्च शिक्षा को सदैव महत्व दिया गया। ग्वालियर जिले में स्वतंत्रता पूर्व से ही शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। ग्वालियर के शासकों ने शिक्षा के महत्व को समझा और उस को बढावा दिया। ग्वालियर के दरबार में शिक्षा को एक अहम स्थान दिया गया और अपनी रियासत को भी शिक्षा के प्रति जागरूक किया गया तथा रियासत के प्रति जिम्मेदारी को समझें भी और इसी कारण 1846 में लश्कर मदरसा के नाम से लश्कर में आधुनिक शिक्षा विद्यालय खोला जिससे सभी मुस्लिम समाज के बालक उसमे पढने के लिए जाते थे। ग्वालियर में अंग्रेजी शिक्षा की भी शुरूआत सन 1859 में हो गई थी ग्वालियर के आसपास के इलाकों तथा गांव में जहां तक की जनसंख्या 2000 से अधिक होती तो वहां पर एक स्कूल की व्यवस्था की गई। आगे चलकर ग्वालियर में 1885 में हाईस्कूल तथा 1890 में इंटरमीडिएट कॉलेज की स्थापना की गई ग्वालियर में धीरे–धीरे शिक्षा का विस्तार होता गया और नई–नई शिक्षण संस्थानों की स्थापना होने लगी। परन्तु इन सभी के बाबजूद भी अधिकतर अमीर लोगों को ही शिक्षण शालाओं में प्रवेश मिलता था तथा गरीब और नीची जाति के लोग अपने बच्चों को नहीं पढ़ा पा रहे थे। स्वंतत्रता से पूर्व जात पात की भावना अपनी चरम सीमा पर थी सन् 1887 मे ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के नाम से विक्टोरिया कॉलेज की स्थापना हुई जिससे ग्वालियर में पढ़ाई का स्तर और सुधरने लगा धीरे–धीरे 1895 में सरदार स्कूल की स्थापना भी हो गई जिससे ग्वालियर में बाहर से विद्यार्थी भी आने लगे किंतु अभी तक ग्वालियर में कन्या विद्यालय नही था और जो विद्यालय थे उनमें लड़के अधिक संख्या में और लड़ियां नाम मात्र ही जाया करती थी फिर सन् 1950 में पहला कन्या महाविद्यालय खोला गया जिससे लड़कियों को भी उच्च शिक्षा प्राप्त हो सके तथा इसके बाद दूसरी कन्या महाविद्यालय कमला राजा कन्या महाविद्यालय के नाम से खुला जो मध्य प्रदेश के बड़े महाविद्यालयों में शामिल है और इसमें आज भी लगभग 7500 छात्राऐं अध्ययन करती है। अजादी से पूर्व शिक्षा के स्तर को ध्यान में रखकर ग्वालियर जिले में बहुत सारी शिक्षण व्यवस्था की गई थी। ग्वालियर पर जब सिंधिया घराने का राज्य था तब शिक्षण संस्थानों का बहुत तेजी से विकास किया गया था आजादी से पूर्व ही ग्वालियर में गजराजा चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना सन् 1946 में हो गई थी। गजराजा चिकित्सा महाविद्यालय का अस्पताल भी है जो आसपास के क्षेत्रों के सभी जाती, गरीब, अमीर के लिए एक समान चिकित्सा सेवा प्रदान करता है।

आजादी के बाद ग्वालियर की शासकीय शिक्षण संस्थानों में और सुधार आया तथा नई–नई तकनीकी पढाई चालू हो गई तथा नए–नए विद्यालय तथा महाविद्यालयों का निर्माण हुआ आज ग्वालियर में अनेक शासकीय और अशासकीय शिक्षण संस्थान है आजादी के बाद सन् 1964 में ग्वालियर में जीवाजी विश्वविद्यालय की स्थापना हो गई जो ग्वालियर का गौरव है अधिकतर ग्वालियर की कॉलेज तथा आसपास के क्षेत्रों की कॉलेज जीवाजी विश्वविद्यालय से ही मान्यता प्राप्त है। ग्वालियर के माधव राव सिंधिया ने शिक्षा को बहुत महत्व दिया उन्होंने शिक्षा तथा शिक्षण संस्थानों को नई दिशा प्रदान की। सरकार की सहायता से ग्वालियर में संगीत और कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई जिसमें प्रत्येक साल कई छात्र छात्राऐं प्रवेश लेते है आज ग्वालियर में शिक्षा को देखते हुए अनेक कोचिंग संस्थाओं तथा सरकारी शिक्षण संस्थानों के साथ निजी शिक्षण संस्थान भी अधिक विकसित हो गऐ है इस समय ग्वालियर में खेल प्रबंद्य, कला विज्ञान, तकनीकी, पर्यटन, शारीरिक शिक्षा, फैशन आदि संस्थानों की स्थापना हो गई है। ग्वालियर का जो शारीरिक शिक्षण संस्थान है जिसका नाम वीरांगना लक्ष्मीबाई के नाम पर है पहले ये लक्ष्मीबाई शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय था अब इसे विश्वविद्यालय बना दिया गया है। इस विश्वविद्यालय में सभी प्रकार के प्रशिक्षण करवाए जाते है। ग्वालियर में कैंसर चिकित्सालय एवं शोध संस्थान भी है जिसमें शोध भी किया जाता है यहां माइक्रोबायोलॉजी में स्नातकोत्तर शिक्षा प्रदान की जाती है नर्सिंग का कोर्स भी है जिससे ग्वालियर के बच्चों को ग्वालियर से बाहर नही जाना पड़ता वह ग्वालियर में ही रहकर अपनी मन पसन्द की शिक्षा प्राप्त कर सकते है ग्वालियर के अभिवावक अपने बच्चों को ग्वालियर में ही अच्छी शिक्षा दिला सकते है ग्वालियर के पास के क्षेत्रों में औद्यौगिक क्षेत्र भी है मालनपुर और बानमोर जहां इंजीनियरिंग करने वाले छात्र आसानी से प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते है। ग्वालियर में सभी प्रकार की पढ़ाई की उच्च शिक्षा व्यवस्था है तथा जो आसपास के क्षेत्र है वहां के बच्चों के लिए भी ग्वालियर शिक्षण संस्थानों के क्षेत्र में अग्रणी है और वे आसानी से यहां शिक्षा प्राप्त कर लेते है। शिक्षा के बदलने तथा विस्तार के साथ शिक्षण संस्थानों में सुविधाओं का भी निरन्तर विकास हुआ है जिससे विद्यार्थियों में शिक्षा के स्वरूप में भी परिर्वतन हुआ। विद्यार्थियों का विकास समय की मॉग है और इसलिए शिक्षा के प्रति जागरूकता का प्रतिफल शिक्षण संस्थानों का विस्तार है।

ग्वालियर जिले में शिक्षण संस्थानों का विस्तार बहुत तेजी से हुआ है परन्तु इसके बाबजूद भी शिक्षण संस्थान समान गुणवत्ता वाले नही है कुछ कम तो कुछ अधिक अच्छे है। किसी किसी शासकीय शिक्षण संस्थानों में तो शिक्षकों की कमी है तो किसी में विद्यार्थियों के लिए कोई सुविधाऐं ही नही है जिससे शिक्षा प्रभावित होती है इसलिए शिक्षा और शिक्षण शालाओं के विस्तार के साथ उनमें आधारभूत सुविधाऐं भी होनी चाहिए तभी शिक्षा का विस्तार अच्छा होता है।

II साहित्य की समीक्षा

किसी भी शोध अध्ययन में साहित्य की समीक्षा करना अनिवार्य होता है क्योंकि यह एक आधार शिला के समान होता है और शोधार्थी का कार्य इसी पर निर्धारित होता है। शोध कार्य पर उपलब्ध साहित्य का विस्तारपूर्वक अध्ययन शोध कार्य को सुगम बना देता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध से सम्बंधित कुछ साहित्य का पूर्वालोकन इस प्रकार है

(क) मिश्रा हेमा (2014) –
शोध अध्ययन – ''अध्यापको की रूचि और संस्थानों का अध्ययन किया ''

निष्कर्ष – इस अध्याय का संक्षेप में निष्कर्ष निकाला तो यह ज्ञात हुआ कि किसी भी महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु विद्यार्थियों के लिए शिक्षक एक प्रेरणास्पद घटक होते है और शिक्षक द्वारा किए गए सभी कार्यो का प्रभाव शिक्षण संस्थानों पर पड़ता है जहॉ शिक्षक द्वारा किए गए अच्छे कार्य से संस्था की ख्याती होती है वही दूसरी तरफ अच्छा न करने पर प्रतिष्ठा प्रभावित होती है। यदि शिक्षक अपनी भूमिका सही से निर्वाह करता है तो शिक्षण संस्थानों के साथ विद्यार्थियों का भी विकास होता है।

(ख) वर्मा रमेश (2010) –
शोध अध्ययन – ''उच्च शिक्षा और शोध परिवर्तन की पहल ''

निष्कर्ष –इस अध्याय से यह स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उच्च शिक्षा को उत्कृष्ट बनाने के फेसले पूरी तरह सही नही है क्योंकि पहला प्रयास यही होना चाहिए कि विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में छात्रों की उपस्थिति मानक के अनुरूप 75: हो और शिक्षक अनिवार्य रूप से पढ़ाये इसके लिए उच्च स्तर पर निगरानी होनी चाहिए।
मनुष्य अपना विकास स्वंय ही करता है उसी के विकास के कारण शिक्षा में भी विस्तार हुआ है। किसी भी समस्या से निकलने के लिए प्रयासों की आवश्यकता होती है। किसी विषय, अनुसंधान के विषय में तब तक पूर्ण जानकारी नही होगी जब तक कि पूर्व अनुसंधानों का अध्ययन नही किया गया हो। इसलिए पूर्व अनुसंधानों का अध्ययन करना अति आवश्यक है।

III शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के यह उद्देश्य निम्नलिखित है।

(क) ग्वालियर जिले में शिक्षण संस्थानों के विस्तार का अध्ययन करना ।

(ख) शिक्षण संस्थानों के महत्व को समझना।

(ग) सरकारी शिक्षण संस्थानों की चुनौतियों का अध्ययन करना ।

(घ) शिक्षण संस्थानों की समस्या के सम्बधं में सुझाव देना।

IV शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध प्रविधि में द्वितीय समंको का प्रयोग किया गया है। द्वितीय समंक वे समंक होते है जिनके विषय में पहले से संकलित सामग्री होती है द्वितीयक समंक कहलाते है जिनके अन्तर्गत वे सामग्री आती है जो पहले से प्रकाशित या अप्रकाशित रूप से कही न कही उपलब्ध होती है। द्वितीयक समंको के प्रमुख स्त्रोत पुस्तके, पुस्तकालय, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, सग्रहालय, सरकारी प्रतिवेदन इसके साथ साथ इन्टरनेट भी सहायक है। शोधार्थी ने इन सभी का सहारा लिया।

V शोध अध्ययन का क्षेत्र

किसी भी कार्य को करने से पहले कार्य का क्षेत्र निर्धारित कर लेना चाहिए। शोधार्थी ने अपनी शोध में ग्वालियर क्षेत्र में शासकीय शिक्षण संस्थनों के विस्तार का अध्ययन किया है कि किस प्रकार से ग्वालियर में शिक्षण संस्थानों का विकास हुआ तथा किस प्रकार से उच्च शिक्षा को महत्व दिया गया।

VI चुनौतियां

शासकीय शिक्षण संस्थानों की चुनौतियां निम्नलिखित है।

(क) कुछ विद्यालयों तथा महाविद्यालयों का भवन ऐसा हो गया है कि जर्जर हो और उन्ही भवनों में कक्षा लगाई जाती है जिससे बच्चों को डर रहता है।

(ख) कई शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों की कमी भी पाई गई है शिक्षा व्यवस्था जिससे डगमगा जाती है।

(ग) शासकीय शिक्षण संस्थानों में कई ऐसी संस्थाएं है जिसमें शिक्षक सही से बच्चों को नही पढ़ा रहे है।

(घ) शासकीय शिक्षण संस्थानों में छात्र प्रवेश तो लेते है पर कक्षा में नही आते क्योंकि हाजरी ली ही नही जाती।

(च) शिक्षण संस्थानों में बैठने की व्यवस्था अच्छी ना होना।

(छ) शिक्षण संस्थानों में समय की परेशानी।

(ज) शासकीय शिक्षण संस्थानों में पीने योग्य पानी की व्यवस्था ना होना।

(झ) शासकीय शिक्षण संस्थानों में गंदगी का बढना।

(ट) शासन की गुणवत्ता में कमी।

(ठ शिक्षक प्रबंद्यक शिक्षक की शिक्षा और प्रशिक्षण स्कूल प्रशासन और प्रंबद्य के स्तर में कमी।

(ड) शिक्षण संस्थानों की खराब वैश्विक रैकिंग।

(ढ) महंगाई का भी शिक्षा और शिक्षण व्यवस्थाओं पर असर पड़ता है।

(त) छात्रों को शासकीय महाविद्यालय में आधारभूत सुविधाओं की कमी का होना।

(थ) 21 वी सदी में भारत की शिक्षा नीतिगत बदलाव के दौर से गुजर रही है यह भी एक चिनौती का कारण बनता जा रहा हौ।

(द) शिक्षण संस्थानों में बृद्धि तो हुई है परंतु संस्थानों की संख्या ही बड़ी है उनकी गुणवत्ता नहीं बड़ी है।
(ध) उच्च शिक्षण संस्थानों में पुस्तकालयों का भी अभाव है।

VII समाधान के लिए सुझाव

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित समाधान प्रस्तुत किए हैं।

(क) विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के शिक्षको और छात्रों को श्रेष्ठतम सुविधाऐं प्रदान करनी चाहिए जिससे उनमे निरंकुशता का बीज न आसके।

(ख) सरकार को न सिर्फ उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या को बढाने पर ध्यान देना चाहिए बल्कि उनकी गुणवत्ता को भी श्रेष्ठ बनाना होगा ।

(ग) ग्वालियर के सर्वोच्च गुणवत्ता वाले संस्थानों तथा केंन्द्रीय विद्याालयों में भी शिक्षको की बहुत कमी है एंव राज्य के विश्वविद्यालयों की हालात तो और भी खराब है अतः इसके लिए आवश्यक है कि सरकार को विश्वविद्यालयों के लिए शिक्षको की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

(घ) शासकीय विश्वविद्यालयों में पीने योग्य पानी की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

(ड़) विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की वित्तीय स्थिति को बेहतर बनाने हेतु सरकार को सहयोग देना चाहिए।

(च) शिक्षण संस्थानों में सभी छात्र समान होने चाहिए। प्रत्येक छात्र के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

(छ) पुराने बने भवनों को नए तरह से निर्माण किया जाना चाहिए।

(ज) सभी छात्रों का कक्षा में जाना अनिवार्य होना चाहिए एंव प्रतिदिन हाजरी भी लेनी चाहिए।

VIII निष्कर्ष

संम्पूर्ण शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा हमारे जीवन का आधार है शिक्षा के बिना जीवन की कल्पना नही के समान है। ग्वालियर जिले में भी शिक्षण संस्थानों का विस्तार बहुत तेजी से हुआ है स्वतंत्रता से पहले और बाद में भी शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया। भारत के स्वतंत्र होने से पहले ही ग्वालियर के राजा महाराजाओं द्वारा शिक्षण संस्थानों की स्थापना की जा चुकी थी तथा भारत के स्वतंत्र होने के बाद तो ग्वालियर में सभी विषयों से सम्बंधित उच्च शिक्षा के लिए अच्छी शिक्षण संस्थानों की व्यवस्था है परन्तु फिर भी इस में सुधार की आवश्यकता है जिससे शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता में

और सुधार हो सके तथा अधिक से अधिक विद्यार्थियों को समान लाभ मिल सके।

संदर्भ सूची

[1] अल्टियस ब्लॉग : शिक्षा में समस्याऍं, 2011

[2] अनुपमा सिंघल एंव एस.पी. कुलश्रेष्ठ, शैक्षिक संस्थानों में तकनीकी के मूल आधार, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा 2012 पृष्ठः40

[3] जायसवाल, सीताराम शिक्षा में निर्देशन और परामर्श विनोद पुस्तक प्रकाशन आगरा 1990

[4] शिक्षण संस्थान और समाज कल्याण मंत्रालय 1971 ''समानता की ओर रिपोर्ट ''